Skill Enhancement Course-Education

B.A Programme Semester-4

Paper: Reflective Learning

By: Neha Goswami

19th April 2021

Email: nehagoswami003@gmail.com

Let’s Revise

- Note-taking: Note-taking is the practice of writing down or otherwise recording key points of information. Note-taking involves certain cognitive behaviour; writing notes engages your brain in specific and beneficial ways that help you grasp and retain information
- Improve your Note-taking skill: Make clear and accurate notes
- Come to class prepared
- Compare your notes
- Minimize distractions
- Organize your notes
- Use abbreviations and symbols
- Write clearly
- Review your notes
- Write down questions
- Avoid Digital notes
- Note taking method

Let’s Revise

- **Critical reading** is an attempt to get the readers to read and understand, on a deeper level, the material that they're engaged with. It is a more complex form of reading that asks the reader to analyse the material and interpret it. It's also important for evaluating materials.

Critical readers, ask the following question:

- How was an argument made? What choices were made in terms of content included in the material? What reasoning was used in the reading? What assumptions did the writer make during their writing?
- A **mnemonic,** also known as a memory aid, is a tool that helps you remember an idea or phrase with a pattern of letters, numbers, or relatable associations

Today's Class

- Nature of reflective learning through:

➢ Letters

➢ Diaries

➢ Blogs

➢ Visuals

- **2. Gandhi on Hindi as the national language**

(From a photocopy of the original in Mahadev Desai's hand, CWMG, Vol.XIV.)

Motihari,

21 January 1918

Dear Gurudev,

For my forthcoming address before the Hindi Sammelan at Indore, I am trying to collect the opinions of leaders of thought on the following questions:

(i) Is not Hindi (as *bhasha* or Urdu) the only possible national language for inter-provincial intercourse (प्रांतीय मेल-जोल)and for all other national proceedings (राष्ट्रीय कार्यवाहियों)?

(ii) Should not Hindi be the language principally used at the forthcoming Congress?

(iii) Is it not desirable and possible to give the highest teaching in our schools and colleges through the vernaculars? And should not Hindi be made a compulsory second language in all our post-primary schools?

I feel that if we are to touch the masses and if national servants are to come in contact with the masses all over India, the questions set forth above have to be immediately solved and ought to be treated as of the utmost urgency. Will you kindly favour me with your reply, at your early convenience?

I am

yours sincerely,

M. K. Gandhi

- **Tagore on the use of Hindi**

(Copy of a letter written by Tagore to Gandhi.)

Santiniketan,

24 January 1918

Dear Mr. Gandhi,

I can only answer in the affirmative the question you have sent to me from Motihari. Of course Hindi is the only possible national language for interprovincial intercourse in India. But, about its introduction at the Congress, I think we cannot enforce it for a long time to come. In the first place, it is truely a foreign language for the Madras people, and in the second, most of our politicians will find it extremely difficult to express themselves adequately in this language for no fault of their own. The difficulty will be not only for want of practice but also because political thoughts have naturally taken form in our minds in English. So, Hindi will have to remain optional in our national proceedings until a new generation of politicians fully alive to its importance, pave the way towards its general use by constant practice as a voluntary acceptance of a national obligation.

Yours very sincerely,

Rabindranath Tagore

आलेखः सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है_ – एजुकेशन मिरर.pdf - Adobe Acrobat Reader DC (32-bit)
File Edit View Sign Window Help
Home Tools
आलेखः सीखने का वास्तविक...
Sign In
1 / 7
150%

आलेखः सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है?

Posted on March 6, 2021 by गजेन्द्र राउत, संस्थापक जिज्ञासा इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग एण्ड डेवेलपमेंट, अमरावती, महाराष्ट्र

10 Votes

Like F
ताज़ा पोस
अध्ययनः
रोचक औ
करें?
भाषा सिख
डिकोडर' ब
आलेखः स
आलेखः र
सिखाने के
की ज़मीन
चर्चा में: ई
8.26 x 11.69 in
EN
AM 12:18
19-04-2021

आलेख: सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है_ – एजुकेशन मिरर.pdf - Adobe Acrobat Reader DC (32-bit)
File Edit View Sign Window Help
Home Tools आलेख: सीखने का वास्तविक... ×
Sign In
1 / 7
160%

गजेन्द्र राउत लिखते हैं, "मुझे आपको बताते हुए खुशी हो रही है कि एक अभिभावक ने आलेख पढ़कर मुझसे पूछा कि आप ऑनलाइन पढ़ने-पढ़ाने के खिलाफ क्यों हैं? जबकि हमारे पास दूसरा कोई रास्ता इस महामारी के समय नहीं है? एक बात मैं यहाँ स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैं ऑनलाइन पढ़ाना और पढ़ने के खिलाफ नहीं हूँ। मुझे समस्या है तरीके की, और वह तरीका संचालित होता है ,किसी के लिए "सीखने" का क्या मतलब है? इस बात का असर ऑनलाइन हो या ऑफलाइन, दोनों के ऊपर होता है। खासकर बच्चों के सन्दर्भ में। शेष विस्तार से पढ़िए इस लेख में।"

पिछले आलेख में **ऑनलाइन पढ़ाना और पढ़ने को लेकर बात की गई थी** जिससे काफी समस्याएं निर्माण हो रही है?" उस लेख में सवाल उठाये गये थे कि क्या छोटे बच्चे भी बड़ों की तरह ऑनलाइन सीख सकते है? क्या एक वयस्क जैसे सीखता है वैसे ही छोटे बच्चे भी सीखते है? सीखना-सिखाना चाहे ऑनलाइन हो या ऑफ़लाइन, इफेक्टिव नहीं हो सकता अगर सीखने वाले की समझ में इजाफा नहीं होता है, पढ़ाना मतलब सिर्फ बताना नहीं होता और सीखने का मतलब सिर्फ बताया हुआ सुनना नहीं होता है. ऐसे में फिर सवाल आता है कि "सीखने" का मतलब क्या है?

सीखने के वास्तविक मायने क्या हैं?

8.26 x 11.69 in
EN AM 12:19 19-04-2021

आलेखः सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है_ – एजुकेशन मिरर.pdf - Adobe Acrobat Reader DC (32-bit)
File Edit View Sign Window Help
Home Tools आलेखः सीखने का वास्तविक... ×
Sign In
2 / 7
160%

4/18/2021

सीखना मानव गतिविधियों में सबसे आम है। अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग लोगों के लिए सीखने के अलग-अलग अर्थ होते हैं। उदाहरण के लिए, साइकिल चलाना सीखना गणित सीखने से अलग है; भौतिक विज्ञान सीखना नैतिकता से अलग है। अगर कोई पढ़ाया गया विषय समझ में आया कि नहीं इसका यह पता लगाना है, तो यह जानना बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है कि विभिन्न संदर्भों में वास्तव में सीखने का क्या मतलब है। बेशक, सीखना कई तरीकों से हो सकता है। "सीखने" के बारे में कोई क्या सोचता है इसका पढ़ाने के लिए और मूल्यांकन के लिए निहितार्थ हैं।

1940 के दशक में यह यह माना जाता था कि सीखना मतलब व्यवहार में तुलनात्मक रूप से कोई कम या ज्यादा स्थायी परिवर्तन जो अनुभव का परिणाम है। अगर हम गहराई से देखें तो, सीखने की यह परिभाषा ज्ञान, विश्वास, दृष्टिकोण और मूल्यों के बजाय सीखने के औसत दर्जे के व्यवहार परिणामों पर केंद्रित है। इस तरह की शिक्षा में शिक्षक की भूमिका ज्ञान देने वाले की होती है और बच्चे की ज्ञान ग्रहण करने वाले की , जिसमे बच्चे का सहभाग निष्क्रिय माना जाता है जिसका उदाहरण है – जॉन लॉक का तबुला रसा मतलब कोरी पाटी जिसमे ज्ञान भरना होता।

इसमें शिक्षक को एक विशेष क्षेत्र में एक विशेषज्ञ के रूप में माना जाता है और यह एक निष्क्रिय व्यक्ति को केवल जानकारी देने के लिए अच्छा होता है। यह दृष्टिकोण 1950 के दशक में लोकप्रिय हुआ। यह मान लिया गया था कि हम परीक्षण और परीक्षाओं का संचालन करके बुद्धिमत्ता और सीखने को माप सकते हैं, और ये हमें जो सीखा गया है उसकी स्पष्ट समझ देते हैं।

8.26 x 11.69 in
EN AM 12:20 19-04-2021

आलेखः सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है_ – एजुकेशन मिरर.pdf - Adobe Acrobat Reader DC (32-bit)
File Edit View Sign Window Help
Home Tools
आलेखः सीखने का वास्तविक...
Sign In
2 / 7
160%
Sign In

सीखने का ऐतिहासिक संदर्भ में विश्लेषण

हालाँकि सीखने के इस दृष्टिकोण की 1970 के दशक में काफी आलोचना हुई और व्यवहारवादियों ने माना कि उनका मानवीय सीखने को लेकर जो दृष्टिकोण है वह बहुत ही सीमित है। अगर आप आसपास नजर दौड़ाते है तो पाएंगे की आजकाल ऑनलाइन शिक्षा के नाम पे यही हो रहा है (मै ये बात खास करके बच्चों के संदर्भ में कह रहा हु, हालाँकि ये बात कॉलेज के बच्चों के लिए भी उतनी ही सच है, एक साथ 50, 60, 70 कभी कभी 150 तक बच्चे एक साथ ऑनलाइन क्लास ज्वाइन करते है, शिक्षक बताते हैं और बच्चे सुनते हैं, चैप्टर ख़तम होता है, पीडीएफ फाइल आती है, जिसमे कुछ प्रश्न होते है, उनको लिखकर भेजना होता है। सत्र के दौरान कोई सीखा या नहीं सीखा इससे किसी को लेना-देना नहीं, क्या इससे सीखने में वृद्धि हो रही है? ऐसे लगता है सभी अपना-अपना कर्तव्य निभा रहे है, यह बात ऑफलाइन के लिए भी उतनी ही सच है अगर हम सीखने के इस दृष्टिकोण को मानते हैं।

"सीखना" क्या होता है इसके नए विवरणों के साथ संज्ञानात्मकवादी आए, जिसे 'कंस्ट्रक्टिविस्ट मॉडल या रचनावादी मॉडल' कहते है। जिसमे सीखने वाले को ज्ञान का निर्माण करने वाले एक सक्रिय और स्वतंत्र अर्थ-निर्माता के रूप में सोचा गया। इस रचनावादी मॉडल में, शिक्षक और शिक्षार्थी की उपरोक्त मॉडल (रिसेप्टिव-ट्रांसमिशन) की तुलना में विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ होती हैं। शिक्षक इस मॉडल में एक प्रमुख स्थान रखता है, लेकिन वह नए ज्ञान, कौशल और अवधारणाओं की खोज को सुविधाजनक बनाने, छात्रों को कनेक्शन बनाने और नई अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद करने के लिए माना जाता है। रचनावादी सीखने को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखते हैं जिसमें नए और पुराने अनुभवों के बीच संबंध बनाना, नए ज्ञान को एकीकृत करना और नए स्कीमा (समझ का तानाबाना) का विस्तार करना शामिल है।

8.26 x 11.69 in
EN AM 12:20 19-04-2021

आलेखः सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है_ – एजुकेशन मिरर.pdf - Adobe Acrobat Reader DC (32-bit)
File Edit View Sign Window Help
Home Tools
आलेखः सीखने का वास्तविक...
Sign In
2 / 7
160%

सीखनाः प्रक्रिया बनाम उत्पाद

सीखना एक प्रक्रिया है, उत्पाद (प्रोडक्ट) नहीं। सीखने की इस प्रक्रिया में चाहे बच्चा हो या वयस्क, ज्ञानेन्द्रियो के द्वारा (आँख, कान, त्वचा, जीभ, नाक) अनुभव प्राप्त करते है। इन अनुभवों के संकेत मस्तिष्क तक जाते है। मस्तिष्क उन अनुभवों को अमूर्त बनाकर अवधारणाएँ बनाता है। मस्तिष्क इन अवधारणाओं को विभिन्न संजालो के रूप में व्यवस्थित करता है। इस प्रकार हुए अनुभवों को, अवधारणाओं (कॉन्सेप्ट) को और संजालो को मस्तिष्क याद रख सकता है। जरुरत पड़ने पर इन चीजों को पूण: स्मरण भी करता है। अवधारणाओं के आपसी सम्बन्धो का ढांचा ही हमारी समझ होता है, जो सीखने का परिणाम है। आपके लिए नीचे एक समझ का संभावित ढांचा दिया गया है। यह बढ़ता ही जायेगा, जैसे-जैसे उससे सम्बंधित अनुभव होंगे।

8.26 x 11.69 in
EN AM 12:21 19-04-2021

आलेखः सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है_ – एजुकेशन मिरर.pdf - Adobe Acrobat Reader DC (32-bit)
File Edit View Sign Window Help
Home Tools आलेखः सीखने का वास्तविक... ×
Sign In
3 / 7
160%

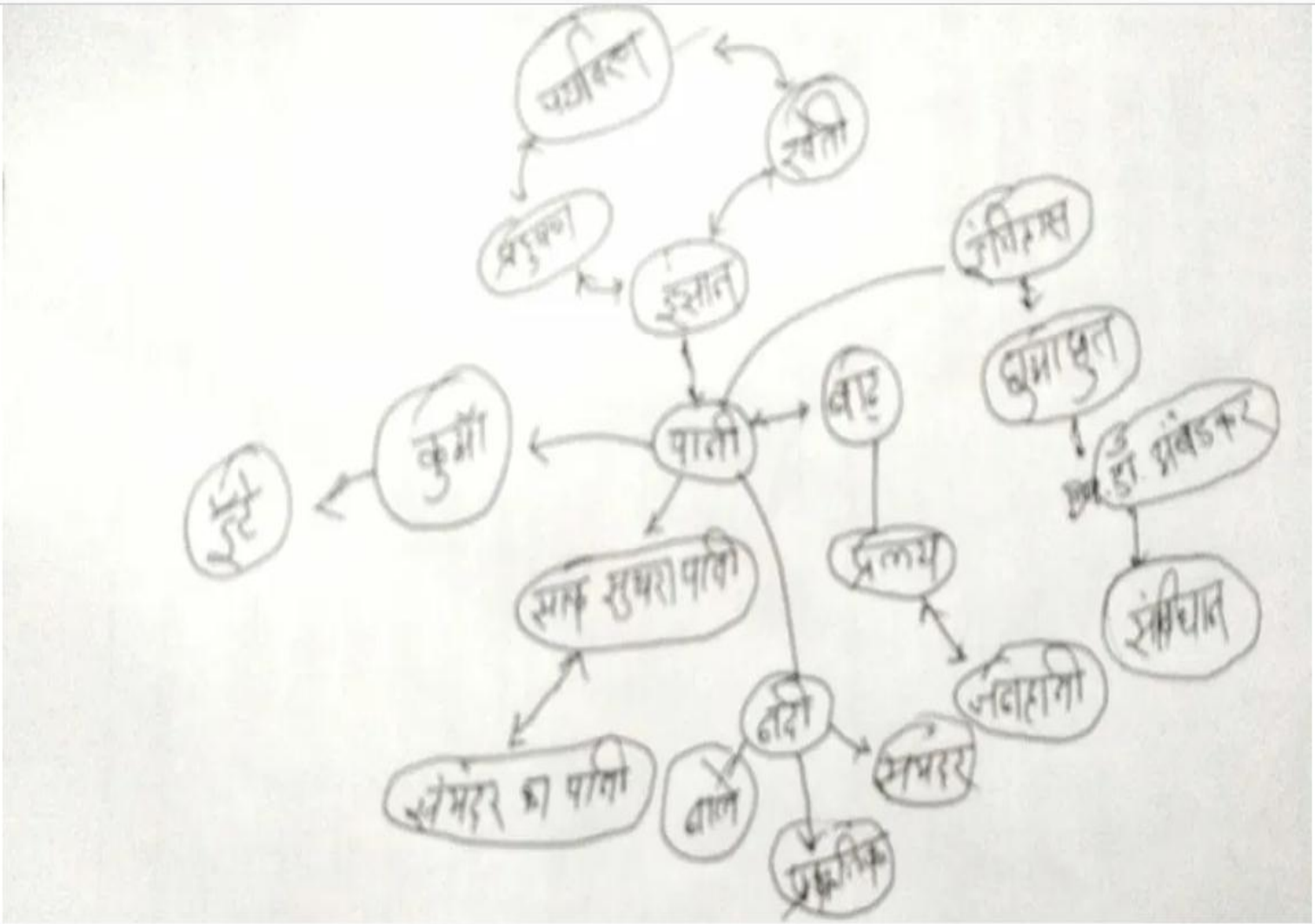

8.26 x 11.69 in
EN AM 12:24 19-04-2021

आलेख: सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है_ – एजुकेशन मिरर.pdf - Adobe Acrobat Reader DC (32-bit)
File Edit View Sign Window Help
Home Tools आलेख: सीखने का वास्तविक... Sign In
3 / 7 160%

इस रचनावादी मॉडल के लिए मूल्यांकन कार्य और फीडबैक की प्रक्रियाएं अलग-अलग होंगी, जो की विद्यार्थियों से अपेक्षा रखती है की वे सक्रिय रहे और समस्या की गहराई से जाँच पड़ताल करे। उदाहरण के लिए, किसी गणितीय समस्या को हल करते समय, बच्चे तर्क निर्माण की प्रक्रिया में लगे होते हैं। वे पहले से ही सीखी गई या उनके बारे में मौजूदा ज्ञान को एक साथ खींचकर ऐसा करने की कोशिश करते हैं। वे समाधान को खोजते-खोजते अपने तर्क का निर्माण और पुनर्निर्माण करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनकी अपनी समझ उत्तरोत्तर बढ़ती है जो की पिछले ज्ञान और सीखने के अनुभवों के साथ व्याख्या, अर्थ और कनेक्शन के रूप में परिष्कृत होती जाती है। सीखने के इस दृष्टिकोण को मानने वाले का कक्षा में व्यवहार/या चाहे ऑनलाइन क्लास हो, उसमे बदलने के संभावना है।

सीखने का मूल्यांकन से क्या संबंध है?

अगर किसी शिक्षक के पास सीखने को लेकर यह दृष्टिकोण है और वह जानता है कि बच्चे का मूल्यांकन क्यों कर रहा है, यह विचार उसे यह तय करने में एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करता है कि बच्चे का मूल्यांकन करने के लिए कौन सी तकनीकें लागू की जाए। गणित में "क्यों" को समझने के लिए, शिक्षक को गणितीय अवधारणाओं की पूरी समझ होनी चाहिए। तभी वह उन जटिल गणितीय विचारों को बच्चों को समझा पाता है। नीचे गणित की कक्षा के रोजमर्रा के अनुभव से एक उदाहरण दिया है –

एक कक्षा में मैं बच्चों की नोटबुक देख रहा था , मेरी नजर निचे दिए गए उदाहरण पर पड़ी।

25

+26

8.26 x 11.69 in
EN AM 12:25 19-04-2021

एक कक्षा में मैं बच्चों की नोटबुक देख रहा था , मेरी नजर निचे दिए गए उदाहरण पर पड़ी।

25

+36

——-

511

मैंने तुरंत गलत x नहीं लगाया। मैंने बच्चे को पास बुलाया और उसके साथ बातचीत की। बातचीत कुछ इस तरह रही :

शिक्षक : यहां आओ और पढ़ो तुमने नोटबुक में क्या लिखा?
छात्र: पच्चीस प्लस छत्तीस , बराबर पाँच सौ ग्यारह

शिक्षक : बताओ दस प्लस दस कितने होते है ?
छात्र: बीस

https://educationmirror.org/2021/03/06/what-is-the-real-meaning-of-learning-an-article/

आलेख: सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है_ – एजुकेशन मिरर.pdf - Adobe Acrobat Reader DC (32-bit)
File Edit View Sign Window Help
Home Tools
आलेख: सीखने का वास्तविक...
Sign In
4 / 7
150%

शिक्षक: बीस प्लस बीस कितने होते है ?
छात्र: चालीस

शिक्षक: चालीस प्लस चालीस कितने होते है ?
छात्र: अस्सी

इस समय तक छात्र को एहसास हो गया कि उसने गणना में कुछ गलतियाँ की हैं, मैंने छात्र के साथ बात करना जारी रखा।

शिक्षक: आप 25 और 36 देख सकते हैं, दोनों 40 से छोटे हैं, अगर 40 प्लस 40 से 80 होते हैं, तो 25 प्लस 36 पाँच सौ ग्यारह नहीं हो सकते है
छात्र: हां, यह नहीं हो सकता, यह 80 से कम होना चाहिए

मुझे लगता है कि मात्रा की यह समझ उस समस्या को समझने की शुरुआत है। मैंने छात्र को एक संख्या प्रणाली में समूहीकरण की अवधारणा को समझने में मदद की। इसके लिए मुझे कुछ अवधारणाओं पर वापस जाने की आवश्यकता पड़ी।

समस्या का समाधान, तर्क और विश्लेषण

8.26 x 11.69 in
EN AM 12:30 19-04-2021

आलेखः सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है_ – एजुकेशन मिरर.pdf - Adobe Acrobat Reader DC (32-bit)
File Edit View Sign Window Help
Home Tools
आलेखः सीखने का वास्तविक...
Sign In
4 / 7
150%

समस्या का समाधान, तर्क और विश्लेषण

यहाँ आपने देखा बच्चे ने समाधान को खोजते खोजते अपने तर्क का निर्माण और पुनर्निर्माण किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उसकी अपनी समझ बढ़ी जो की पिछले ज्ञान और सीखने के अनुभवों के साथ व्याख्या, अर्थ और कनेक्शन के रूप में और परिष्कृत हुई। मेरा मानना है कि गणित जैसे विषयों में यदि कोई बच्चा यह नहीं समझ पाया कि वह क्या कर रहा है, जो भी कर रहा है , वैसा ही ही क्यों कर रहा है, तो यह भविष्य में समस्याएं पैदा कर सकता है, वह विषय की प्रकृति के कारण गणित में उच्च अवधारणाओं को नहीं समझ सकता है जैसे की गणित में आगे बढ़ने से पहले हर कदम को समझना चाहिए। ऐसी समस्या से ग्रस्त 90% प्रतिशत उदहारण मिलेंगे जब आप बच्चो के साथ अपूर्णांको (फ्रैक्शन) जैसी अवधारणाओं पर काम करेंगे।

सीखने में बच्चों की सक्रिय भूमिका है

इसके बाद सीखने का और एक सिद्धांत आया, जिसमें ज्ञान के निर्माण में या बच्चे के सीखने में दूसरों की भूमिका भी शामिल थी। इसमें माना गया की 'सीखना दूसरों के साथ काम करने के रूप में ज्ञान का निर्माण करना है। इसके विपरीत, डैन इसे सीखने के एक प्रशिक्षुता मॉडल के रूप में संदर्भित करते हैं; इस मॉडल को गणित में सिचुएटेड लर्निंग के क्षेत्र से संबंधित माना जाता है। सीखने के इस मॉडल के अनुसार, छात्र, स्कूल और अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों में अलग-अलग तरह से गणित सीखते और करते हैं। कुछ शोधकर्ताओं ने जांच की है कि कैसे एक वातावरण में पूरी तरह से मग्न होकर सामाजिक संदर्भ गणित सीखने में सक्षम बनाते है। उदाहरण के लिए लेव ने किराने की खरीदारी का अध्ययन किया, और तेरसिंहा, शिलमान और कैर्र ने सड़क का गणित और स्कूली गणित का अध्ययन किया। गिप्स का कहना है कि सीखने के इस मॉडल में, केवल एक व्यक्ति अपने सीखने के लिए ज़िम्मेदार नहीं है, अपितु वयस्कों द्वारा समर्थन या साथियों के साथ

8.26 x 11.69 in
EN AM 12:30 19-04-2021

आलेखः सीखने का वास्तविक अर्थ क्या है_ – एजुकेशन मिरर.pdf - Adobe Acrobat Reader DC (32-bit)
File Edit View Sign Window Help
Home Tools
आलेखः सीखने का वास्तविक...
Sign In
5 / 7
145%

सीखने की प्रक्रिया का विश्लेषण

हाल के घटनाक्रम में सीखने के सिद्धांत सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांतकारों से आए हैं, जिनमें मानव-विज्ञानी भी शामिल हैं। दो रूपक सीखने के इन सभी सिद्धांतों को रेखांकित करते हैं: अधिग्रहण और भागीदारी। मोटे तौर पर, हम कह सकते हैं कि व्यवहारवादी सिद्धांत और निर्माणवादी सिद्धांत कौशल, ज्ञान और समझ के अधिग्रहण से संबंधित हैं, जबकि सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत सीखने को सांस्कृतिक गतिविधि में भागीदारी के रूप में देखते हैं। ये सिद्धांत और रूपक हमें विभिन्न लेंसों के माध्यम से "सीखने की प्रक्रिया" को देखने में और समझने में मदद करते हैं और हमें मूल्यांकन के लिए सीखने और इसके निहितार्थों के बारे में हमारे विचारों को चुनौती देने में मदद करते हैं। मुझे लगता है कि शिक्षण और मूल्यांकन की योजना बनाते समय शिक्षक द्वारा उपरोक्त सभी विचारों पर विचार किया जाना चाहिए जिससे उन्हें अपने शिक्षण को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है चाहे वह ऑनलाइन हो या ऑफलाइन ।

8.26 x 11.69 in
EN AM 12:32 19-04-2021

Task for you

- Write a reflective note on this article and send it to me.

Nature of Reflection

QUESTIONS

For Next Class (21st April 2021)

Reflection: Processes and Practices

(Write one page on your most amazing experience of life-school, college, love, marriage, friend, help someone, learn something, parents or any other incident)